International Journal of Multidisciplinary Research and Development
Online ISSN: 2349-4182, Print ISSN: 2349-5979, Impact Factor: RJIF 5.72
www.allsubjectjournal.com
Volume 4; Issue 8; August 2017; Page No. 290-291

प्रचलित तालों का परिचय

शुभम वर्मा
अतिथि प्रवक्ता, संगीत विभाग, छत्रपति शाहूजी महाराज वि0वि0, कानपुर, उत्तर प्रदेश, भारत।

सारांश
तीन ताल उत्तर भारतीय संगीत का सर्वाधिक लोकप्रिय एवं प्रचलित ताल है। तीन ताल मध्य, द्रुत और अतिद्रुत लयों में बजाने के लिए अत्यन्त उपयुक्त ताल है। एक ताल–आधुनिक ख्याल गायकी के युग में विलम्बित लय में बजाया जाने वाला सबसे अधिक प्रचलित ताल एक ताल है। एक ताल में पेशकार, कायदा, टुकड़ा, परन आदि सभी कुछ बजाया जाता है। रूपक ताल तबले की ताल है। रूपक ताल में पेशकार, कायदा, टुकड़ा, परन आदि सभी कुछ बजाया जाता है। झपताल का प्रयोग ख्याल अंग की गायकी, तन्त्र वाद्यों की गतों तथा तबले पर स्वतंत्र वादन में भी किया जाता है। उत्तर भारतीय संगीत के दो आधार तालों में एक दादरा ताल है। यह लोक संगीत, भाव संगीत, फिल्म संगीत, ग़ज़ल एवं भजन आदि के साथ संगत करने का एक अत्यन्त प्रचलित और लोकप्रिय ताल है। उत्तर भारत में कहरवा ताल का नाम सबसे पहले लिया जाता है। यह ताल का प्रयोग ठुमरी, गज़ल, भजन, लोकगीत आदि गायन शैलियों में होता है। इस ताल को यदि लोक अवनद्य वाद्यों का आधार ताल मानें तो अनुपयुक्त न होगा।

शब्द कुंजी: तीन ताल, एकताल, रूपक, झपताल, कहरवा, दादरा, गज़ल, भजन, लोकगीत, तन्त्रवाद्य

प्रस्तावना

1. तीन ताल: इसे त्रिताल भी कहते हैं। यह उत्तर भारतीय संगीत का सर्वाधिक लोकप्रिय एवं प्रचलित ताल है। यह ताल बहुत प्राचीन नहीं है। यवनकाल में इस ताल का नाम 'खमसा' था। इस ताल के अनेक रूप भिन्न–भिन्न नामों से प्रचार में है। उन सभी का स्वरूप पूर्णतः तीन ताल के समान है। उदाहरण के लिए तिलवाड़ा ताल, अद्धा ताल, पंजाबी ताल तथा जत ताल का नाम लिया जा सकता है।

तीन ताल मध्य, द्रुत और अतिद्रुत लयों में बजाने के लिए अत्यन्त उपयुक्त ताल है। तबले पर सोलो–वादन में इसका खूब प्रयोग होता है। अधिकतर मध्य लय के छोटे ख्याल की बंदिशे सितार, सरोद आदि तन्त्र वाद्यों में मसीतखानी और रजाखानी गतें तीन ताल में गाई–बजाई जाती हैं। कत्थक नृत्य में भी तीन ताल का खूब प्रयोग होता है। इस ताल में पेशकार, कायदा, टुकड़ा, परन, गत आदि सभी कुछ बजाया जाता है। यह एक सम–पद और चतुर्मात्रिक ताल है और इसका छन्द रूप 4/4/4/4 है।

तीन ताल

मात्रा–16, विभाग–4, ताली– 1, 5 और 13 पर तथा खाली 9 पर

ठेका–	धा	धिं	धिं	धा।	धा	धिं	धिं	धा।
	X				२			
	धा	तिं	तिं	ता।	ता	धिं	धिं	धा।[1]
	0				३			

2. एक ताल: आधुनिक ख्याल गायकी के युग में विलम्बित लय में बजाया जाने वाला सबसे अधिक प्रचलित ताल एक ताल है। चार ताल और एकताल में बारह मात्रायें होती हैं। केवल ठेके के बोलों में अन्तर है। एकताल में सोलो–वादन भी किया जाता है। इस ताल की सबसे बड़ी विशेषता यह है कि यह अति विलम्बित तय से लेकर अति–द्रुत लय तक बखूबी बजाया जा सकता है। एक ताल में पेशकार, कायदा, टुकड़ा, परन आदि सभी कुछ बजाया जाता है।

एकताल

मात्रा–12 विभाग–6 ताली– 1, 5, 9 और 11 पर, खाली–3 और 7 पर

ठेका

धि	धिं।	धागे	तिरकिट।	तू	ना।
गं		0		२	
कत	ता।	धागे	तिरकिट।	धी	ना।[2]
0		३		४	

3. रूपक ताल: रूपक ताल तबले की ताल है। इस ताल का प्रयोग तबले पर स्वतंत्र वाद के साथ–साथ ख्याल गायन, तन्त्र वाद्यों में गतों में तथा भाव संगीत और भजनों के साथ संगत में खूब किया जाता है। इसकी गणना प्रचलित तालों में की जाती है और इसका वादन मुख्यतः मध्य लय में ही होता है। रूपक ताल में पेशकार, कायदा, टुकड़ा, परन आदि सभी कुछ बजाया जाता है। यह एक असम–पद ताल है और इसका छन्द 3/2/2/ है।

रूपक ताल– मात्रा–7 विभाग–3, ताली–1, 4 और 6 पर

ठेका

ति	ती	ना।	धी	ना।	धी	ना।[3]
X			२		३	

4. झपताल: तबले की मुख्य प्रचलित तालों में झपताल भी एक है। झपताल का प्रयोग ख्याल अंग की गायकी, तन्त्र वाद्यों की गतों तथा तबले पर स्वतंत्र वादन में भी किया जाता है। यह मुख्यतः मध्य लय में वादन की ताल है। झपताल का छंद 2/3/2/3 है।

झपताल: मात्रा–10, विभाग–4, ताली–1, 3 और 8 पर खाली 6 पर होती है।

ठेका

धी	ना।	धी	धी	ना।	ती	ना।	धी	धीना।[4]
X		२			0		३	

5. दादरा: उत्तर भारतीय संगीत के दो आधार तालों में एक दादरा ताल है। यह लोक संगीत, भाव संगीत, फिल्म संगीत, ग़ज़ल एवं भजन आदि के साथ संगत करने का एक अत्यन्त प्रचलित और लोकप्रिय ताल है। 'दादरा' एक उत्तर भारतीय उपशास्त्रीय गायन शैली का भी नाम है। परन्तु यह दादरा ताल में ही गाया जाए, यह आवश्यक नहीं। कभी–कभी यह कहरवा ताल में भी गाया जाता है। चंचल प्रकृति की ताल दादरा मुख्यतः मध्य लय में ही बजाया जाता है। इसमें ठेके के विभिन्न प्रकार तथा लग्गी–लड़ियाँ बजायी जाती हैं।

दादरा में– मात्रा–6, विभाग–2, ताली 1 पर और खाली 4 पर।

धा	धी	ना।	धा	तू	ना।[5]
X			0		

6. कहरवा ताल: मात्रा 8, विभाग 2, ताली 1 पर और खाली 5 पर।

ठेका

धा	गे	न	ति।	न	क	धी	ना।
X				0			

ताल कहरवा आठ मात्राओं का, ताली एक, पाँच पर खाली।
चंचल, चपल, सुहानी मादक, श्रृंगारिका का यह ताल।
ढोल, खोल, नाल, नक्कारा, ताशा, तबला, झांझ, मजीरा।
सब वाद्यों पर खिलता ताल, सभी प्रसन्न हो देते ताल।।
लोक गीत, फिल्मी गीत, भजन, गज़ल और चलता गीत।
रंग सभा सूनी हो जाती, यदि यह नहीं प्रयोग की जाती।।[6]

उत्तर भारत में कहरवा ताल का नाम सबसे पहले लिया जाता है। यह ताल का प्रयोग ठुमरी, गज़ल, भजन, लोकगीत आदि गायन शैलियों में होता है। इस ताल को यदि लोक अवनद्य वाद्यों का आधार ताल मानें तो अनुपयुक्त न होगा।

संदर्भ सूची

1. वाद्य शास्त्र–हरिश्चन्द्र श्रीवास्तव, पृ0 47
2. ताल परिचय भाग–1 –गिरीश चन्द्र श्रीवास्तव, पृ0 110
3. ताल कोश– गिरीश चन्द्र श्रीवास्तव, पृ0 282
4. ताल परिचय भाग–2– गिरीश चन्द्र श्रीवास्तव, पृ0 136
5. ताल परिचय भाग–1 –गिरीश चन्द्र श्रीवास्तव, पृ0 124
6. ताल कोश– गिरीश चन्द्र श्रीवास्तव, पृ0 52